ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-4* July - 2017
Anthology : The Research

युवा पीढ़ी की दास्तान : ''युवाशक्ति''

घनश्याम भारती
विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शासकीय पी.जी. कॉलेज,
गढ़ाकोटा, सागर,
मध्यप्रदेश

सारांश

यह उपन्यास जो युवा शक्ति–1 एवं युवा शक्ति भाग–2 नाम से दो खण्डों में लिखा गया हैं। इस उपन्यास के प्रारम्भ में लेखक ने स्पष्ट कर दिया है कि इस उपन्यास में वर्णित देश का काल्पनिक नाम 'स्वदेश' है। इस उपन्यास के सभी पात्रों, घटनाओं एवं स्थानों के नाम काल्पनिक हैं। स्वदेश की सिविल एवं पुलिस सेवा में उत्तीर्ण अधिकारियों का पदनाम Swadeshiya Administrative Service (S.A.S.) एवं स्वदेशी पुलिस सर्विस (S.P.S.) दिया गया है। मैंने इस उपन्यास के दोनों खण्डों को भली भाँति पढ़ा है। इस वृहद उपन्यास को पढ़ने के पश्चात मुझे ऐसा लगा कि जैसे बंगाली उपन्यासकार विमल मित्र और हिन्दी के उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द का युग वापस आ गया है। इस उपन्यास के प्रारम्भिक पेज पढ़ने से फ्रेंच लेखक एलेक्जेंडर ड्यूमा के उपन्यास थ्री मस्केटियर्स का आभास होता है। उसका नायक अर्तगान भी उपन्यास में इसी तरह प्रकट होता है जैसे इस उपन्यास के मुख्य पात्र बादलराज एवं नायिका हरियाली वर्मा प्रकट होते हैं।

मुख्य शब्द : युवा शक्ति, उपन्यास, साहित्य।

प्रस्तावना

किसी विद्वान ने कहा है कि अगर किसी उपन्यास का प्रारम्भ अच्छा है तो उसका अन्त भी अच्छा होगा। इस उपन्यास के तो प्रारम्भ, मध्य एवं अन्त तीनों अच्छे हैं। इस उपन्यास का प्रारम्भ इसके एक खास पात्र भैरवी नाथ से होता है और अन्त भी इसी पात्र से। उपन्यासकार राजासाब फतेहपुरी ने युवा शक्ति भाग–2 की 'अपनी बात' में लिखा है कि उन्हें सुबह टहलते समय उनके मन में यह विचार आया कि 'क्या है और क्या होना चाहिए ? इसी एक वाक्य के विचार को मूर्त्त रूप देने के लिए लेखक ने यह विशाल उपन्यास लिखा। लेखक ने 'मन की बात' में ये भी बताया है कि इस उपन्यास को लिखने में उन्हें 3 वर्ष 29 दिन का समय लग गया। इससे स्वतः स्पष्ट है कि यह उपन्यास कठिन परिश्रम का प्रतिफल है। यह उपन्यास देखने में अवश्य बड़ा लगता है परन्तु रोचक होने के कारण उतना ही पढ़ने में छोटा लगता है। यह उपन्यास साम्प्रदायिक एवं जातिगत् एकता की मिसाल है। इसकी बानगी हमें उपन्यास युवा शक्ति भाग–1 के तीसरे पेज में ही मिल जाती है। भैरवीनाथ गजल नगर से चलकर अपनी प्रमुख सहेली हरियाली वर्मा के गाँव नारायणपुर आती है। वहाँ यह अपने मित्रों एवं सहेलियों की कब्रों एवं समाधियों के पास बैठकर अपने द्वारा लिखे गये उपन्यास युवाशक्ति को पढ़कर सुनाती है। समाधियों एवं कब्रों में लेटे एवं सोये हुए लोग पति–पत्नी के जोड़ों में इस प्रकार हैं–

1– विजय कुमार कुलश्रेष्ठ, भावना श्रीवास्तव 2– मो0 अहमद, सलमा सिद्धीकी 3– जनार्दन सिंह वर्मा, प्रीति कंसल 4– करीम खाँ, किरन अग्रवाल 5– सौरभ सिंह, सुमन सिंह 6–राम नारायण सिंह राठौर, शालिनी काटजू 7– काली चरण, मालती 8–यश कुमार काटजू, प्रियंका बंसल 9–करन सिंह, श्याम कुमारी 10–बादलराज, हरियाली वर्मा। हरियाली वर्मा की समाधि के पश्चात् भैरवी नाथ की समाधि के लिए खुदी पड़ी जमीन के पश्चात उसके पति जन्मेजय सिंह पट्टा की समाधि बनी हुई है। यही सब पात्र इस उपन्यास के मुख्य पात्र हैं।

मुझे जबसे साहित्य पढ़ने की समझ पाई और अब तक जो कुछ साहित्य को समझ पाया मैंने साम्प्रदायिक एकता की ऐसी मिशाल कहीं नही पाई जहाँ कब्रें एवं समाधियाँ एक ही कतार में एक साथ बनी हों। इस कतार में लेटे हुए व्यक्ति हिन्दू, मुसलमान और खास–खास छोटी–बड़ी जातियों के लोग हैं। इन समाधियों एवं कब्रों में लिखे नामों से यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक हर जाति एवं हर धर्म के लोगों से अपने पात्रों की तरह प्यार करता है। लेखक यह कहना चाहता है कि ईश्वर ने इंसान बनाये हैं और इंसानों ने जाति एवं धर्म। ईश्वर का बनाया हुआ इंसान सही। इंसानों द्वारा बनाये गये धर्म

गलत। इसलिए हे धरती वासियो ! इंसान से प्यार कर उनका प्यार ग्रहण करो। आप चाहे जिसकी पूजा और उपासना करो पर ईश्वर द्वारा बनाये गये इंसानों के बीच में भेदभाव के बीज मत बोओ। ये धरती स्वर्ग समान है। इसका सुख भोगो और इसे दूसरे को भी भोगने दो। इसे नर्क मत बनाओ। इस उपन्यास में कही भी व्यतिक्रम या व्यवधान नहीं है। एक रोचक प्रसंग समाप्त होता है और दूसरा रोचक प्रसंग प्रारम्भ हो जाता है। गंभीर प्रसंगो के बीच हास–परिहास के प्रसंग भी पढ़ने को मिलते हैं। युवा शक्ति भाग–1 में हरियाली वर्मा उसकी सहेलियों, बादलराज एवं उसके मित्रों का नियमित अध्ययन परिश्रम, संघर्ष, मनोरंजन आदि दिखाया गया है। उपन्यास युवाशक्ति के भाग–1 के अन्त में हरियाली, भैरवीनाथ, मालती, किरन, यश कुमार, बादलराज, S.A.S. एवं शालिनी काटजू, सलमा सिद्धीकी, राम नारायण सिंह राठौर, जनमेजय सिंह पट्टा, सौरभ सिंह, कालीचरण S.P.S. में चुने जाने के पश्चात एडमिनिस्ट्रेटिव ट्रेनिंग एकेडमी में करीम की लग्जरी बस में बैठकर पर्वत नगरी चले जाते हैं। ट्रेनिंग के पहले ये लोग आपस में सगाई सूत्र में बंधकर ये निर्णय लेते हैं कि हम सब लोग एक ही मण्डप के नीचे भविष्य में विवाह करेंगे।

युवाशक्ति भाग–2 में इन लोगों की पोस्टिंग प्रशिक्षण के पश्चात् प्रान्त नम्बर 12 के संवेदनशील एवं अतिसंवेदनशील जिलों में कर दी जाती है। प्रान्त नं0 12 की मुख्यमंत्री सुश्री लीलावती हैं। हरियाली वर्मा, शालिनी एक जिले में, मालती एवं शलमा दूसरे जिले में किरण एवं कालीचरण तीसरे जिले में, प्रियंका बंसल एवं सौरभ सिंह चौथे जिले में, बादलराज एवं रामनारायण सिंह पांचवे जिले में, यश कुमार काटजू, जनमेजय सिंह पट्टा छठे जिले में एवं भैरवीनाथ, संदीप शिखर सांतवे जिले में पोस्ट कर दिये जाते हैं।

जब ये लोग नियुक्ति पत्र पा जाते हैं तब प्रान्त नं0 12 की राजधानी मखनपुर में हरियाली की राय पर लड़कियाँ लड़कों को एक–एक नई कार खरीदकर इस शर्त पर गिफ्ट करती हैं कि जब हम लोग एक ही मंडप के नीचे शादी करेंगे तब तुम लड़के लोग हम लड़की लोगों को एक–एक मर्सडीज गाड़ी गिफ्ट करना। जब सब लोग अपने–अपने जिले के रास्ते से चलने को होते हैं तब हरियाली सबको सलाह देती है कि हम लोग अपने–अपने जिलों में जनता के हित में 'दर्द के बदले दर्द और प्यार के बदले प्यार' नीति को अपनायेंगे इसके पश्चात सब लोग एक दूसरे को हाथ हिलाकर अपने–अपने जिलों के रास्ते चले जाते हैं विदा होते समय सबकी आंखो में बिछड़ने का गम दिखाई देता है। जिलों में ये लोग सफेद पोश माफियाओं एवं गुंडे बदमाशों से भीड़ते और उन्हें ठीक करते हैं। इनके कामों को देखने एवं समझने के लिए युवाशक्ति भाग–2 के अनुच्छेद छः एवं उसके आगे के अनुच्छेदों को पढ़ा जा सकता है। इनके अच्छे साहसपूर्ण और जनता के भलाई के कार्यों को देखकर स्वदेश की पूरी जनता इनके साथ हो जाती है। इन लोगों ने विद्यार्थी जीवन में ही करीम खां की सहायता से देश–विदेश समाज सुधार संस्था गठित की थी। इनके नौकरियों में आते–आते ज्यादातर विदेशों एवं स्वदेश का युवा वर्ग इंटरनेट के माध्यम से इनकी संस्था के साथ जुड़ जाता है और उनकी संस्था का सदस्य बन जाता है। जिलों को ठीक करने के पश्चात् ये लोग अपने–अपने पदों से करीम खां की सलाह पर केन्द्र सरकार को त्याग पत्र दे देते हैं। ये लोग फिर पूरे देश के जितने गांवों का भ्रमण कर सकते हैं, करते हैं। दबे कुचले लोगों की अत्यन्तहीन दशा को देखकर इनकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। ये कमजोर तबके के लोगों के परिवारों को एक–एक लाख रूपये और वस्त्र देकर उनकी सहायता करते हैं।

अब मैं इस उपन्यास के अंतिम भाग की समीक्षा में जाकर पाठकों की उत्सुकता को कम नहीं करना चाहता। मेरा यह पूरा विश्वास है कि जो भी युवाशक्ति उपन्यास पढ़ेगा वह सोचेगा कि अगर उसकी लड़की छात्रा है तो उसे हरियाली वर्मा एवं उसकी सहेलियों की तरह चरित्रवान साहसी और हर बुराई के खिलाफ लड़ने वाली बने। अगर वह अधिकारी बने तो इन्हीं लोगों की तरह जनता के हित में काम करे। अगर वह राजनेता हो तो हरियाली एवं उसकी सहेलियों एवं उनके मित्रों की तरह अपने देश की गरीबी दूर कर देश को विकसित देशों की श्रेणी में ले आये। इसी तरह इस उपन्यास को जब कोई पुरूष पढ़ेगा तो यही सोचेगा कि मेरा पुत्र भी बादलराज एवं उनके मित्रों की भाँति काम करे। कुछ शब्दों में कहा जा सकता है कि इस उपन्यास की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है। इस उपन्यास के पात्रों ने अपने उत्तम कार्यों से एक काल्पनिक देश स्वदेश की धरती में स्वर्ग लाकर दिखा दिया।

मैं ये भी कह सकता हूँ कि इस उपन्यास को समाज के हर वर्ग के लोगों को पढ़ना चाहिए। देश के कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में इस उपन्यास का संक्षिप्तीकरण करके पढ़ाया जाना चाहिए ताकि हमारे देश को एक चरित्रवान एवं मेधावी युवा वर्ग मिल सके जो देश की प्रगति, विकास और निर्माण में सहयोग कर सके। इस उपन्यास के लेखक राजासाब फतेहपुरी ने हँसते हुए मुझे बताया कि मैंने इस उपन्यास के दोनों भाग 8 अगस्त 2016 को पंजीकृत डाक से माननीय प्रधानमंत्री जी को उनके लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात में' एक पाँच पेज के पत्र के साथ भेजा था। उन्होंने आगे बताया कि मैंने माननीय प्रधानमंत्री जी से अपने उपन्यास युवा शक्ति–भाग–2 के पेज सं0 658 से 666 तक एवं पेज सं0 671 से 673 तक दिये गये सुझावों को पढ़ने के लिए निवेदन किया था। साथ ही मैंने ये भी पत्र में लिखा था कि यदि आप इन सुझावों को पढ़कर इन्हें अपने देश में लागू कर दें तो अपना देश एक विकसित देश एवं आदर्श राज्य बन सकता है। मेरे द्वारा लेखक से यह पूछे जाने पर कि आपने माननीय प्रधानमंत्री जी को अपने पत्र में क्या लिखा है तब हंसते हुए लेखक ने बताया कि मैंने सिर्फ माननीय प्रधानमंत्री जी को अपने प्रिय देश से सम्बन्धित अपने मन की बात पत्र में लिखी थी।

चन्द शब्दों में, मैं यह कह सकता हूँ कि यह उपन्यास कालजयी हो सकता है क्योंकि इसमें समाज को बदलने की क्षमता है। एलेक्जेंडर ड्यूमा के उपन्यास थ्री मस्केटियर्स के शुरूआती पेज में लिखा था कि संसार की

12 श्रेष्ठ पुस्तकों में से एक। मैं कह सकता हूँ कि कहीं भविष्य में इस उपन्यास युवा शक्ति भाग–1 और भाग–2 में यह लिखना न पड़ जाये कि यह उपन्यास संसार की तेरह श्रेष्ठ पुस्तकों में से एक है। अन्त में इस उपन्यास पर यह शेर कहने का मन करता है कि–

"हजारों साल नरगिस अपनी बेनूरी पर रोती है
बड़ी मुश्किल से पैदा होता है चमन में दीदावर ।"

उपन्यास : युवा शक्ति (भाग–1 एवं भाग–2)
उपन्यासकार : राजासाब फतेहपुरी
प्रकाशक : सुलभ प्रकाशन, लखनऊ
संस्करण : 2015 (प्रथम)
मूल्य : 900/– + 900/– = 1800/–